Multidisciplinary International Magazine
(Peer-Reviewed)
ISSN: 2454-2725, Impact Factor: GIF 1.888
www.jankriti.com
Volume 6, Issue 69-70, Jan-Feb 2021

JANKRITI जनकृति

बहु-विषयक अंतरराष्ट्रीय पत्रिका
(विशेषज्ञ समीक्षित)
ISSN: 2454-2725, Impact Factor: GIF 1.888
www.jankriti.com
वर्ष 6, अंक 69-70, जनवरी-फरवरी 2021

प्रकाश मनु के काव्य–साहित्य में बाल सरोकार

पूजा रानी,
शोधार्थी(हिन्दी–विभाग) पंजाब
विश्वविद्यालय,चंडीगढ.,
मोबाईल : 9467609774,
ईमेल:poojapugu11@gmail.com,

सारांश (Abstract)

शैशवावस्था पार करते ही बच्चे की मानसिक अवस्था में स्वतः परिवर्तन होने आरम्भ हो जाते हैं। अपने आस–पास के वातावरण, भौतिक सुख–सुविधाओं, संसाधनों को देखकर उसके ह्रदय में अनेक प्रश्नों का भंवर उमड़ता रहता है। उसकी कल्पना शीघ्र अति शीघ्र जिज्ञासा में परिवर्तित होने लगती है।उसकी इस जिज्ञासा को शान्त करने के लिए बाल कविताएँ ही एक सशक्त माध्यम है, जो विशेषकर बच्चों के लिए उनकी रूचि के अनुकूल तथा बच्चों की समझ में आने वाली सहज, स्पष्ट भाषा में रची गयी हो। बाल सहित्य छोटे–छोटे बच्चों को ध्यान में रखकर लिखा गया सहित्य होता है। दरअसल, बाल साहित्य का उद्देश्य बाल पाठकों का मनोरंजन करना ही नहीं अपितु उन्हें आज के जीवन की सच्चाइयों से परिचित कराना है। कविताओं के माध्यम से बच्चों को शिक्षा प्रदान कर सकते हैं तथा उनका चरित्र निर्माण कर सकते है। बाल साहित्य के लेखक को बाल मनोविज्ञान की पूरी जानकारी होनी चाहिए। तभी वह बाल मानस पटल पर उतर कर बच्चों के लिए कहानी या बाल उपन्यास लिख सकता है। बच्चों का मन मक्खन की तरह निर्मल होता है, कहानियों और कविताओं के माध्यम से हम उनके मन को वह शक्ति प्रदान कर सकते है जो उनके मन के भीतर जाकर संस्कार, समर्पण, सदभावना और भारतीय संस्कृति के तत्व बिठा सकते हैं। आधुनिक बाल साहित्य के प्रणंता के रूप में डा. हरिकृष्ण देवसरे का नाम उल्लेखनीय है।

बीज शब्द (Keywords) *बाल सरोकार, मनोविज्ञान, प्रयोजन, मनोरंजन, अधिगम, परिपक्वता।*

भूमिका (Introduction)

"बच्चा बाल साहित्य के लिए नहीं होता, बाल साहित्य बच्चे के लिए होता है।"

बाल कविताएँ ऐसा विषय है, जो बच्चे के मानसिक स्तर पर उतरकर उसे विभिन्न विषयों के संबन्ध में जानकारी प्रदान करती है तथा उसका मनोरंजन करती है। बच्चे अपने आस–पास के वातावरण और वस्तुओं को बड़े ध्यानपूर्वक देखते हैं तथा बड़ों से प्रश्न पूछकर अपनी हर जिज्ञासा को शांत करना चाहते हैं।

डॉ. हरि कृष्ण देवसरे के अनुसार : "आज के बच्चे का कौतूहल विषणु शर्मा के शिष्यों के, ईसप के श्रोताओं और एंडरसन के पाठकों के कौतूहल से बहुत भिन्न है और बहुत अधिक विस्तृत है। यही कारण है कि बाल–साहित्य के आयाम जो कथा–कहानी के चौखटे तक ही पहले सीमित थे अब विज्ञान के प्रश्नों को भी समेटे हुए हैं। वे कथा–कहानियों की शैली से भी परे है। बच्चे के गले वही उतरता है जो रूचिकर होता है।"

आधुनिक युग में ज्ञान–विज्ञान का प्रसार अत्यन्त तीव्र गति के साथ हो रहा है। बालक जब अनेक अवस्थाओं से गुजरता हुआ प्रोढ़ता की ओर अग्रसर करता है, तो जन्म से लेकर बड़े होने तक व्यवहार, आकार, सोच, महत्त्वकांक्षाओ, रूचियों तथा अपनी आदतों में भी परिवर्तन लाता है। बाल–कविताएँ एक ऐसा विषय है, जो विभिन्न सरोकारों को व्यापक आयाम देता हु बालक की छोटी से छोटी और बड़ी से बड़ी आदतों से जुड़ते हुए इस प्रक्रिया को मनोवैज्ञानिक दृष्टिकोण प्रदान करती है।

बालक शब्द की उत्पत्ति : बाल शब्द 'बल+ण से बना है।'[1] जिसका अर्थ है नासमझ, बालक, लड़का अर्थात वक जिसे अभी व्यस्क की संज्ञा नहीं दी जा सकती।

प्रमाणिक हिन्दी कोश में बाल का अर्थ है : बालक, (स्त्री– जो सयाना न हुआ हो, जो अभी निकला हो जैसे – बालसूर्या।[2]

नालंदा विशाल शब्दसागर के अनुसार – "बाल, बालक, लड़का (स्त्री–बाला)[3]

वृहत हिन्दी कोश : "बालक, बच्चा, लड़का, नाबालिग, अनजान, ना समझ"[4]

संवैधानिक दृष्टिकोण से बालक वह है जो देश–विदेश के कानून की दृष्टि से वयस्क न हुआ हो। जैसे भारत में अठारह वर्ष, चीन में अठारह वर्ष, जापान में बारह वर्ष है। अस्तु बालक शब्द से अभिप्राय मानव जीवन के विकास की उस प्रारम्भिक अवस्था से है जिसमें मनुष्य का ज्ञान उपरिपक्व अवस्था में होता है। जैसे भारत में अठारह वर्ष से कम आयु के बच्चे बालक की श्रेणी में आते है।

सरोकार शब्द की उत्पत्ति : सरोकार शब्द मूलतः **फारसी** का शब्द है। इसके लिए अंग्रेजी भाषा का शब्द **'कनसर्न'** (concern) प्रयोग किया जाता है। विभिन्न शब्द कोशों में सरोकार का अर्थ विभिन्न प्रकार से दिया गया है।

अंग्रेजी–हिन्दी कोश के अनुसार "से सम्बन्ध रखना, के लिए महत्त्व रखना, दिलचस्पी लेना, में सलंग्न होना।[5]

मानक विशाल हिन्दी शब्दकोश में सरोकार का अर्थ है– "प्रयोजन, वास्ता, लगाव।"[6]

नालन्दा विशाल शब्दसागर के अनुसार : "आपस के व्यवहार का संबंध, वास्ता"[7]

हिन्दी शब्द सागर के अनुसार : परस्पर व्यवहार का संबंध, लगाव, वास्ता, प्रयोजन, मतलब"।[8]

इस प्रकार 'सरोकार' शब्द किसी विषय से सम्बधित चिंता अथवा चितंन का घोतक है।

विविध बाल सरोकार

1. **बाल मनोवैज्ञानिक सरोकार :** बाल मनोवैज्ञानिक सरोकार बच्चों के मन की बात करते हैं। बच्चों के स्वभाव, बुद्धि, व्यवहार, व्यक्तित्व विकास से संबंधित विषयों का अध्ययन करते है। ये सरोकार बच्चों की संवेदना, सीखना अथवा अधिगम, भाव एवम् संवेग, जिज्ञासा आदि

विषयों पर चर्चा करते है।

2. **सामाजिक सरोकार :** सामाजिक सरोकार से अभिप्राय बच्चे के परिवार, विद्यालय, पड़ोसी और संगी साथियों से संबंधित लगाव से है। इन से जुड़े सरोकार सामाजिक सरोकार में आते हैं।

3. **शैक्षणिक सरोकार :** बच्चे समाज में रहकर प्रतिदिन अपने भीतर मानवीय, नैतिक शिक्षा ग्रहण करते हैं, वही शैक्षणिक सरोकार है। शैक्षणिक सरोकार बच्चों को जीवन में सही दिशा प्रदान करते हैं। बाल साहित्य छोटी–छोटी बातों के माध्यम से बच्चों में ज्ञान का भंडार भर देते हैं।

4. **सांस्कृतिक सरोकार :** सांस्कृतिक सरोकार में बच्चों का खान–पान, रहन–सहन और पहरावा झलकता है। इन सरोकारों में बच्चों की महानगर में जाकर बदलती वेशभूषा, कार्य व्यवहार और महानगरीय बच्चों की गांव में जाकर बदलती दिशा दिखाई देती है। ये सरोकार सांस्कृतिक संक्रमण का बच्चों पर पड़ते प्रभाव दिखाते हैं।

5. **ऐतिहासिक सरोकार :** इतिहास शब्द की व्युत्पत्ति संस्कृत के शब्द इति+ह+आस से हुई है। जिसका अर्थ है वैसा ही सचमुच बोध होना। ऐतिहासिक सरोकार बच्चों को देश के प्रति आदर भाव और उसकी श्रेष्ठता को दिखाते हैं।

6. **विज्ञान एवं सूचना प्रौधोगिकी सरोकार :** विज्ञान एवं सूचना प्रौद्योगिकी सरोकार समाज का अभिन्न अंग है। आज के युग में आधुनिक तकनीक का बच्चों के साथ घनिष्ठ तादात्मय हो गया है। बच्चे विज्ञान की दिन प्रतिदिन हो रही खोज से जीवन में जो बातें ग्रहण करते हैं, वे विज्ञान एवं सूचना प्रौद्योगिकी सरोकार में आती हैं। इसमें खगोल विज्ञान, वनस्पति विज्ञान, भूगोल विज्ञान और गणित विज्ञान कोई भी को सकता है।

7. **बाल समस्याओं से सम्बंधित सरोकार :** ये सरोकार बच्चों से संबंधित अपराध, शोषण और बच्चों के एकांकीपन को सामने लाते हैं। इन समस्याओं को दूर करने के लिए चिंतन भी करते हैं।

प्रकाश मनु की कविताओं में बाल सरोकार

सरोकार	प्रकाश मनु के काव्य–संग्रह	कविता
1 बाल मनोवैज्ञानिक सरोकार	मेरे प्रिय शिशुगीत मेरी प्रिय बाल कविताएँ हाथी का जूता	इतवार चिट्ठी का संदेश नई डायरी

चिट्ठी का संदेश :

"चिट्ठी में है मन का प्यार,
चिट्ठी है घर का अखबार
इसमें सुख–दुख की हैं बातें
प्यार भी इसमें सौगातें
कितने दिन कितनी ही रातें
तयकर आई मिलों पार!"[9]

2 सामाजिक सरोकार	प्रकाश मनु की बाल कविताएँ बच्चों की गीत पहेलियाँ	अब तो खुश हो जब बजता

हमने भी देखा चिड़ियाघर :

"हमने भी देखा चिड़ियाघर
पपा संग थे, मम्मी संग थी
संग था भैया बब्बल,
आगे–आगे चलती छुटकी
कहती दिखलाओ बुलबुल।
हाथी देखा भालू देखा,
देखा हमने शेर बब्बर।"[10]

3 शैक्षणिक सरोकार :

इक्यावन बाल कविताएँ होगा महका–महका देश
हाथी का जूता बुद्ध कहलाओंगे

वरना

मेरे प्रिय शिशुगीत क्या होता है

ई–मेल, सुनों

होगा महका–महका देश :

"जब सब बच्चे अच्छे होंगें
होगा अच्छा अपना देश,
जब सब बच्चे सच्चे होंगे
होगा सच्चा अपना देश।"[11]

4 सांस्कृतिक सरोकार :

बच्चों की गीत–पहेलियाँ करे इशारे
प्रकाश मनु की बाल कविताएँ गरम परांठा
मेरे प्रिय शिशुगीत होली आई रे

होली आई रे :

"फिर रंगों का धुम–धड़क्का, होली आई रे,
बोली काकी, बोले काक्का–होली आई रे।
मौसम की है मस्त ठिठोली, होली आई रे,
निकल पड़ी बच्चों की टोली, होली आई रे।"[12]

5 ऐतिहासिक सरोकार :

मेरे प्रिय शिशु गीत दीप जले थे
इक्यावन बाल कविताएँ सुनो कहानी बापू की

सुनो कहानी बापू की :

सुनो कहानी बापू की।
अंग्रेजों का अत्याचार
मचा रहा था हाहाकार,

तब आए थे सबसे आगे
लेकर मधुर प्रेम के धागे।"[13]

6 विज्ञान एवं सूचना : प्रौद्योगिकी

मेरे प्रिय शिशु गीत — क्या होता कंप्यूटर जी

बच्चो की गीत पहेलियाँ — जब चाहो तो

क्या होता कंप्यूटर जी :

"कंप्यूटर पर चित्र बनाओ
कंप्यूटर पर लिखते जाओ,
चाहो तो सब उलट–पुलटकर
अपनी दुनिया नई बसाओं।
समझ गए ना, बोलो चंदर–
दोस्त हमारा है कंपयूटर।"[14]

7 राष्ट्रीय सरोकार :

प्रकाश मनु की बाल कविताएँ — तब होगी सच्ची दीवाली

मेरे प्रिय शिशु गीत — हमीं मुकुट हैं

हमीं मुकुट हैं :

"हम है नन्हे वीर सिपाही
भारत देश विशाल के,
हमीं मुकुट हैं भारत माँ के
मोती उज्जवल भाल के।"[15]

8 नैतिक सरोकार :

हाथी का जूता — आज सवेरे
प्रकाश मनु की बाल कविताएँ — पेड़ नीम का

आज सवेरे :

"आज सवेरे गया पार्क में
देखा मैनें फूलों को,
फूलों को देखो तो भीई
समझ गया मैं भूलों को।"[16]

9 पारिवारिक सरोकार :

मेरी प्रिय बाल कतिताएँ — पापा तंग करता है, भैया
इक्यावन बाल कविताएँ — पापा, दीदी बहुत बुरी हैं

पापा तंग करता है भैया :

"पापा तंग करता है भैया!

कार तोड़ दी इसने मेरी
फेंक दिए दो पहिए दूर,
हार्न टुट कर अलग पड़ा है
बत्ती भी है चकनाचुर।
कहता–पापा से मत कहना,
ले लो मुझसे ऐ रूपैया।"[17]

10 आधुनिक सरोकार :

मेरे प्रिय शिशु गीत कैमरा
प्रकाश मनु की बाल कविताएँ दुनिया सुंदर हा
जाए
कैमरा :

नया कैमरा चाचा लाए,
दरवाजे से ही चिल्लाए–

कहाँ गया, जल्दी आ छोटू,
बैठ यहाँ, खीचूँगा फोटो।"[18]

निष्कर्ष (Conclusion)

बाल सरोकार : बाल सरोकार से अभिप्राय बालकों से संबंधित उस लगाव से है जो बालक को एक स्वतन्त्र ईकाई मानते हुए उससे जुड़े हुए विषयों को व्यापक/ वृहद् वैज्ञानिक आधार देते है। इसका क्षेत्र बालक के समाज के साथ–सा विकसित होता है। बाल सरोंकारों का अध्ययन न तो मात्र बाल मनोवैज्ञानिक दृष्टि से जुड़ा हुआ है तथा न ही मात्र बाल विकासात्मक अध्ययन से। यह ऐसा अध्ययन है जो बालक के जन्म से प्रारम्भ होकर उसके वयस्क होने की प्रक्रिया का विवेचन एवम् विश्लेषण करता है।

यही कारण है कि बाल मनोविज्ञान, समाज, संस्कृति, शिक्षा, मनोरंजन, विज्ञान एवम् सूचना प्रौद्योगिकी बालकों से जुड़ी हुई विभिन्न समस्याएं तथा विशिष्ट भाषा से जुड़े हुए विविध सरोकार बाल सरोकार हैं, जिनका केन्द्र बालक है।

सन्दर्भ ग्रंथ

1. आप्टे, वामन शिवराम, संस्कृत हिन्दी कोश नाग प्रकाशन दिल्ली 1988 पृ.–714
2. वर्मा रामचन्द, प्रामाणिक हिन्दी कोश, हिन्दी सहित्य कुटीर बनारस वि. 2000 पृ–808
3. नवल जी, नालन्दा विशाल शब्दसागर, न्यु इम्पीरियल बुक डिपों, दिल्ली संस्करण–2002 पृ.–673
4. कालिका प्रसार, बृहत–हिन्दी कोश, ज्ञानमण्डल लिमिटेड स. 2008 पृ.–805
5. बुल्फे फादर कामिल, अंग्रेजी हिन्दी कोश, एस चन्द एण्ड कम्पनी लि. नई दिल्ली 1997 पृ.–127

6. पाठक रामप्रकाश, मानक विशाल हिन्दी शब्दकोश रॉयल बुक डिपों, दिल्ली– 2006 पृ.–1040

7. नवल जी, नालन्दा विशाल शब्दसागर न्यू इम्पीरियल बुक डिपों दिल्ली, 2007 पृ. –1416

8. दास श्याम सुन्दर, हिन्दी शब्द सागर नागरी प्रचारिणी सभा काशी, 1928 पृ.–3473

सन्दर्भ काव्य–संग्रह

9. मनु प्रकाश, मेरी प्रिय बाल कविताएँ (काव्य–संग्रह), चिट्ठी का संदेश (कविता), विद्यार्थी प्रकाशन, दिल्ली, 2012, पृ. सं. 20

10. मनु प्रकाश, इक्यावन बाल कविताएँ (काव्य–संग्रह), हमने भी देखा चिड़ियाघर, सावित्री प्रकाशन, दिल्ली, 2014, पृ.स. 9

11. मनु प्रकाश, इक्यावन बाल कविताएँ (काव्य–संग्रह), होगा महका–महका देश, वही (सावित्री प्रकाशन, दिल्ली, 2014), पृ.सं. 71

12. वही, मेरे प्रिय शिशुगीत (काव्य–संग्रह), होली आई रे (कविता), हिमाचल बुक सेंटर, दिल्ली, 2015, पृ.सं. 55

13. वही, इक्यावन बाल कविताएँ (काव्य–संग्रह), सुनों कहानी बापू की कविता, सावित्री प्रकाशन, दिल्ली, 2014, पृ. 33

14. वही, मेरे प्रिय शिशुगीत (काव्य–संग्रह), क्या होता कंप्यूटर जी (कविता), हिमाचल बुक सेंटर, दिल्ली, 2015, पृ. 46

15. वही, हमी मुकुट हैं (कविता), वही, पृ. 39

16. वही, हाथी का जूता (काव्य–संग्रह), आज सवेरे (कविता), भारतदेशम् प्रकाशन, दिल्ली, 2010, पृ. 9

17. वही, मेरी प्रिय बाल कविताएँ, (काव्य–संग्रह), पापा तंग करता है भैया (कविता), विद्यार्थी प्रकाशन, 2012, पृ. 37

18. वही, मेरे प्रिय शिशु गीत (काव्य–संग्रह), कैमरा (कविता), हिमाचल बुक सेन्टर, दिल्ली, 2015, पृ. 33